ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 48 • Vol. 191-192 • Issue : July-Dec, 2021

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Editorial and Advisory Board

Prof. Kuldip Chand Agnihotri
Vice-Chancellor
Central University of Himachal Pradesh
Dharamshala, Dist. Kangra, Himachal Pradesh-176215

Prof. M.R. Gelra
Founder Vice-Chancellor and Emeritus Professor
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341306, Rajasthan

Prof. Naresh Dadhich
Former Vice Chancellor
Vardhaman Mahaveer Open University,
Kota, Rajasthan

Prof. R.S. Yadav
Former Dean, Faculty of Social Sciences
Kurukshetra University,
Kurukshetra, Haryana

Prof. S.R. Vyas
Former HOD, Dept. of Philosophy, MLSU, Udaipur
Former Member Secretary, ICPR, HRD Ministry, GOI, New Delhi

Prof. Dayanand Bhargava
Emeritus Professor, JVBI, Ladnun
Former Chairman, Veda-Vijnana,
J.R. Rajasthan Sanskrit Univesity, Jaipur

Prof. Arun Kumar Mukerjee
Former Professor, Dept. of Western Philosophy
Jadavpur University, Kolkata (W.B.)

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 48 **Vol. 191-192** **Issue : July-Dec, 2021**

Patron

Prof. Bachhraj Dugar
Vice-Chancellor

Editors

Prof. Nalin K. Shastree
Dr. Samani Amal Pragya
Dr. Alok Kumar Jain
Achyut Kant Jain

Managing Editor
Mohan Siyol

Publisher
Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun - 341306 (Raj.) India

Contact us: **tulsiprajnarj@gmail.com**
+91-9887111345

CONTENTS

Āgama
Ācārya Mahāprajña 01

Articles
पर्यावरण : जैन सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि 09
मुनि महावीर कुमार

Understanding Forgiveness 21
Prof. Prema Raghavan

Forgiveness in Various Schools of Thought 28
Dr. Ravindra Singh Rathore
Prof. Anil Dhar

वैशेषिकदर्शनाभिमतशब्दानित्यत्वसिद्धिः 41
डॉ. विश्वेश वाग्मी

वेदों में वर्णित माता-पिता व सन्तति के स्नेहिल भावों का विश्लेषण 49
डॉ. वन्दना यादव

महात्मा गांधी का भाषिक चिन्तन : राष्ट्रभाषा और मातृभाषा के संदर्भ में 60
डॉ. वीरेन्द्र सिंह

The Role of a *Purohita* in Vedic Warfare : A Study 71
Rinki Deka

Samyaka-Darśana : Gateway to *Mokṣha* 83
Atmarpit Devang
Dr. Jayshreeben Desai

'जीवन-साधना' का संरक्षण : नवकार-महामंत्र एक विश्लेषण 92
साध्वी विरागदृष्टाश्रीजी

पर्यावरण : जैन सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

मुनि महावीर कुमार*

सारांशिका

'जैन पर्यावरण चिन्तन' जैन संस्कृति के अहिंसा चिन्तन से जुड़ा हुआ है। प्रश्नव्याकरण सूत्र (आगम) में अहिंसा को दया, क्षमा, कल्याण, मंगल, प्रमोद, अभय-स्थिति, नन्दा (आनन्दमयी), पवित्रा, विमुक्ति आदि अनेक नामों से अभिहित किया गया है। भगवान् महावीर ने अहिंसक जीवन-चर्या का एक सूत्र दिया इन्द्रियसंयम। बाह्य पर्यावरण में विद्यमान प्राणि-जगत् के प्रति जीव की कायिक-वाचिक-मानसिक क्रियाएं होती हैं। वे क्रियाएं यदि विवेकहीन हों, सावधानी, जागरुकता के साथ न हों तो हिंसा घटित हो जाती है। इसी दृष्टि से ठाणं में दुष्प्रयुक्त कायिक-वाचिक-मानसिक प्रवृत्तियों को 'शस्त्र' कहा गया है। भगवान् ने 'आत्मौपम्य' (आत्मसमता, सभी जीवों में समान आत्मा का अस्तित्व मानना) दर्शन का निरूपण किया और इसे पर्यावरण-समस्या के समाधान हेतु अपेक्षित बताया। 'संयम दर्शन' के रूप में तथा हिंसा को असंयम के रूप में उपस्थापित कर इन्द्रिय व मन के संयम को पर्यावरण संरक्षण का प्रमुख साधन बताया। जैन आचार-संहिता में पालनीय अनेक व्रत हैं, अणुव्रत हैं, महाव्रत भी हैं, श्रमणोचित समितियां व गुप्तियां हैं–ये सभी अहिंसा धर्म के अंग हैं। ये स्वयं हिंसा-त्याग रूप हैं और अहिंसा के पोषक भी हैं। सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह व्रत भी अहिंसा धर्म के ही विस्तार हैं, वे अहिंसा व्रत की उसी प्रकार रक्षा करते हैं, जिस प्रकार धान्य के खेत के लिए कांटों का घेरा रक्षा करता है। प्रस्तुत आलेख में अहिंसा-हिंसा विवेक, उपासना में अहिंसा प्रतिष्ठा, समता व वीतरागता, इन्द्रिय संयम व्रत आदि प्राकृतिक पर्यावरण : अहिंसा के प्रयोग स्थल, जैन श्रावकों की जीवन शैली और पर्यावरण-चेतना व्यसन मुक्ति व आहार-शुद्धि और बारह व्रतः पर्यावरण-चेतना की आधार-भूमि आदि बिन्दुओं के आधार पर जीवन में प्रतिष्ठित कर सामाजिक सौहार्द, मानसिक शान्ति, मैत्री भावना आदि का भी संवर्धन करते हैं।

मुख्य शब्द

आत्मौपम्य, श्रमण, अनगार, अणुव्रत, महाव्रत।

---

* **मुनि महावीर कुमार**, मुख्य मुनि एवं शोधार्थी।

Understanding Forgiveness

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

Prof. Prema Raghavan*

Abstract

Forgiveness is a continuous process, not something we do just once or twice. It is the process of letting go of our attachment to the negative thoughts in our mind. The only requirement is our willingness to change the thoughts in our mind. We forgive a person but it does not mean we condone the act.

Forgiveness is to accept completely and forgive the person whom you think has hurt you by his behaviour. This rests on the assumption that the behaviour is of deliberate or malicious intent, which may not be true. It is choosing love over fear, peace over conflict regardless of the circumstances affecting our lives. It is a free act of love in its purest and highest form.

Key Words

Forgiveness, Development, Achievement, Enlightenment, Revenge.

---

* **Prof. Prema Raghavan,** (Rtd.), Regional Institute of Education, Mysuru, Karhahaka

Forgiveness in Various Schools of Thought

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

Dr. Ravindra Singh Rathore*

Prof. Anil Dhar**

Abstract

Supreme forgiveness is pertinent in all the three worlds. It helps to sail across the ocean of birth and death; it enables us to be endowed with the three jewels i.e., Right belief, Right knowledge and Right conduct and safeguards us from a miserable plight. The persons, who without finding fault with others bear patiently the harsh words of the rogues, accepting them as the outcome of the evil actions of their previous births. They experience their own celestial virtues and are deeply engrossed in their self-realization and have been termed by Lord Jinendra as gifted with supreme forgiveness.

This paper attempts to elaborate the concept of forgiveness in various schools of thought. We know the persons gifted with supreme forgiveness, worshipped by Gods and divine beings skilled in various arts and sciences (*vidyādharas*) and the innumerable holy saints who vanquish all worldly miseries on attaining the eternal omniscience and getting rid of the blemishes of karma have become enlightened souls .

Key Words

Original Sin, *Aphimi*, *Insaan*, *Nasiya, Kṣamā, Dayā, Kṛpā, Kāruṇya, Adveśa, Anugraha-pradāna, Dvaiśa, Naraka, Jīva.*

---

* **Dr. Ravindra Singh Rathore,** Assistant Prof., Dept. of Nonviolence and Peace, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Raj).

****Prof. Anil Dhar,** Head, Dept. of Nonviolence and Peace, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Raj).

वैशेषिकदर्शनाभिमतशब्दानित्यत्वसिद्धिः

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

डॉ. विश्वेशः वाग्मी*

सारसङ्क्षेपः

श्रुतिकालादरभ्यैव प्रायशः सर्वैरपि भारतीयैर्मनीषिभिः शब्दार्थावधिकृत्य अनेके महत्त्वपूर्णाः सिद्धान्ताः प्रस्तुताः वैशेषिकदार्शनिकाः कणादप्रशस्तपादप्रभृतयोऽऽचार्या अपि तत्र नापवादाः। वैशेषिकदर्शनुसारं शब्दस्तु न द्रव्यरूपः, न कर्मरूपः, न वा सामान्य विशेष समवायरूप अपितु चतुर्विंशतिर्गुणेष्वन्यतमः नित्यस्याकाशस्य विशेषगुणः श्रोत्रमात्रग्राह्यश्च वर्तत इति ; किन्तु नित्यस्याकाशस्य विशेषगुणत्वेऽपि वैशेषिकेस्तत्र शब्दस्य नित्यत्वं प्रतिषिध्यते। यद्यपि सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्त-व्याकरणदर्शनानि शब्दस्य नित्यत्वं स्वीकुर्वन्ति परमेतेषां चार्वाक-जैन-बौद्ध-न्याय-वैशेषिक दर्शनानि तस्य अनित्यत्वम् अभिमन्यन्ते। तत्रापि प्रामुख्येन च मीमांसकाभिमतशब्दाभिव्यक्तिपक्षे दोषान् प्रदर्श्य वैशेषिकैः शब्दस्योत्पत्तिमत्त्वात्, क्षणिकत्वात्, कारणवत्त्वात्, लिङ्गाच्चादिभिः युक्तियुक्तैरकेरुपायैः शब्दस्यानित्यत्वं ज्ञाप्यते। शब्दस्य नित्यत्वानित्यत्योऽयं विवादः प्रमुख रूपेण न्यायवैशेषिक-मीमांसकयोश्च मध्ये स्फुटतरमभिलक्ष्यते। वैशेषिकदर्शनाभिमतानां तासामेव शब्दानित्यत्वसाधकानामवधारणानामेकस्मिन्नेव स्थले सुसम्बद्धरूपेणोपस्थापनं समग्रतया विश्लेषणञ्च प्रस्तुतस्यास्य शोधपत्रस्याभिलषितमिति।

मुख्यशब्दाः
वैशेषिकदर्शनम्, शब्दानित्यत्ववादः, कणादः, उत्पत्तिमत्त्वम्, क्षणिकत्वम्, कारणवत्त्वम् ।

* **डॉ. विश्वेशः वाग्मी**, सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः, महात्मा-गांधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः, बिहारः।

वेदों में वर्णित माता-पिता व सन्तति के स्नेहिल भावों का विश्लेषण

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

डॉ. वन्दना यादव*

सारांशिका

वैदिक युग में वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों में पूर्ण समन्वय स्थापित था। परिणामस्वरूप समाज सुसंस्कृत, सभ्य एवं आध्यात्मिक था। मनुष्य के गुण, कर्म, योग्यता और समभाव के आधार पर चार वर्ण तथा कार्य, चिन्तन, मनन एवं बुद्धि के आधार पर आश्रम व्यवस्था पल्लवित हुई। सामाजिक विकास के लिए लिये तीन ऋण और पुरुषार्थ चतुष्टय की कल्पना की गई। परिवार व्यक्ति के लिये सामाजिक जीवन की आधार-शिला एवं आरंभिक प्रयोगशाला है। वैदिक संहिताओं में 'मातृदेवो भव एवं पितृदेवो भव' के आदर्शों को अभिव्यक्त किया है।

प्रस्तुत आलेख में वैदिक परिवार के अपनी सन्तति के प्रति कर्त्तव्यों को प्रस्तुत करके वर्तमान समय के लिये पूर्णरूप से उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। परिवार की स्थिति, गृहस्थाश्रम का महत्त्व, माता-पिता के सन्तति के प्रति कर्त्तव्य, परिवार में माता की गौरवमयी स्थिति, सन्तति के माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य आदि बिन्दुओं के द्वारा वैदिक परिवार के सम्मुख करवाया गया है। अतः आज आवश्यकता है भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर वैदिक संहिताओं के पुनः अवगाहन की, जिससे पुनः पारस्परिक मृदुता एवं समरसता लायी जा सके।

मुख्य शब्द

परिवार, गृहस्थाश्रम, सुमेधा, एकनीड, परमतत्त्व, सदाचार, समरसता।

* **डॉ. वन्दना यादव**, सहायक आचार्य, संस्कृत, राजकीय कला महाविद्यालय, चिमनपुरा।

महात्मा गांधी का भाषिक चिन्तन : राष्ट्रभाषा और मातृभाषा के संदर्भ में

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

डॉ. वीरेन्द्र सिंह*

सारांशिका

महात्मा गांधी के भाषिक चिंतन के प्रमुख रूप से दो बिन्दु हैं– संपर्क भाषा और ज्ञान की भाषा। संपर्क भाषा के रूप में महात्मा गांधीजी पूरे भारत में एक भाषा की अवधारणा पेश करते हैं, जिसके तहत भाषा को मान्यता देने के पक्ष में है जो सरल हो, सीखने में आसान हो और जिसका सम्बन्ध भारतीय संस्कृति और सभ्यता से हो, उस एक भाषा की कल्पना के रूप में वह हिंदुस्तानी अथवा हिंदी को उपयुक्त भाषा मानते हैं। उनकी हमेशा से मान्यता रही है कि ज्ञान हमें मातृभाषा में ही ग्रहण करना चाहिए। अर्थात् शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। विदेशी भाषा के माध्यम से विद्यार्थी रट्टू और ज्ञानहीन बन जाते हैं। उनका मौलिक ज्ञान और सोचने समझने की क्षमता धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है। इसका एक फायदा यह भी होगा कि प्रांतीय भाषा अपने आप विकसित और उन्नत होगी। राष्ट्रभाषा की आवश्यकता हमें इसलिए है कि संपूर्ण भारत में हम एक संपर्क भाषा से राष्ट्रीयता की कल्पना कर सकते हैं। राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्र की संस्कृति का विकास कर सकते हैं। राष्ट्रभाषा की क्या अवधारणा है, राष्ट्रभाषा में कौन-कौन से गुण होने चाहिए और हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा सबसे उपयुक्त कौन सी है? गांधीजी द्वारा किए गए राष्ट्रभाषा और मातृभाषा की उन्नति के प्रयास? गांधीजी की दृष्टि में मातृभाषा क्यों जरूरी है और मातृभाषा में हमें किस प्रकार से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करनी चाहिए? ये सभी इस शोध आलेख के विचारणीय विषय हैं। ऐसे समय में जब हिंदुस्तान की कोई भी संवैधानिक राष्ट्रभाषा नहीं है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनी हुई है तो गांधीजी का भाषिक चिन्तन आधुनिक समय में और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

मुख्य शब्द

महात्मा गांधी, राष्ट्रभाषा, मातृभाषा, हिंदुस्तानी, स्वराज्य, प्रांतीय भाषा, हिंदी-उर्दू विवाद, संस्कृति, संपर्क भाषा, देवनागरी लिपि ।

---

* **डॉ. वीरेन्द्र सिंह**, सहायक आचार्य, हिन्दी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

The Role of a *Purohita* in Vedic Warfare : A Study

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

Rinki Deka*

Abstract

The Vedic literature testifies the evolution and growth of the *Āryan* of a military hierarchy, which also determines the nature of their secular administration. The *Ṛgvedasaṁhitā* is the earliest extent record of the *Āryan* where the information of their settlements in India is found. For the settlement, they had to fight with the obstructing aborigines, whom they called *dāsas*. The Vedic literature contains much information on warfare. War is a political institution, which generally implies hostilities and armed conflicts between nations or states, or between parties within the same state or country. War should be started when the forces of the enemy are in an agitated state of mind. The Vedic people had to fight with the others for offensive and defensive purposes. They were also proficient in the art of employing spells. Before going to the battlefield they performed some rituals and for that they appointed a *purohita*. In the Vedic period, the king was the head of the body of politics. The king went to the battlefield with his royal priest, where he took ritualistic steps for the welfare of the king. He played the role as the king's well-wisher and adviser in the battlefield during the Vedic period.

Key Words

Purohita, *Brahmaṇa*, King, Battlefield.

---

* **Rinki Deka,** Research Scholar, Dept. of Sanskrit, Gauhati University, Guwahati, Assam.

Samyaka Darśana : Gateway to *Mokṣa*

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

Atmarpit Devang*

Dr. Jayshreeben Desai**

Abstract

All living beings are looking for happiness without any exceptions, however, because of wrong belief, they are searching for happiness in material pleasures. An enlightened being says that searching for happiness is right but the direction is wrong. Instead of experiencing happiness and peace inside, one wanders outside searching for the same. With the right understanding, one can search for happiness from the right source as shown by Jainism. Jainism advocates that first one should strive for right belief (*samyaka darśana*) as it starts the journey towards liberation but due to misinterpretation of scriptures, it has become confusing regarding the order of three jewels described in Jainism right belief (*samyaka darśana*), right knowledge (*samyaka jñāna*) and right conduct (*samyaka cāritra*).

According to Jainism, the fruit of rational contemplation is the right belief. After attaining the right belief, a deluded world view comes to an end, as a result, one masters the art of manufacturing happiness. One doesn't experience slavery of senses and happiness gained by them, as he/she remains peaceful and happy without sense objects outside.

Key Words

Samyaka-darśana, Mokṣa Self-realization, Religion, Philosophy.

---

* **Atmarpit Devang,** Research Scholar (Jainism), C.U. Shah University, Gujarat.

****Dr. Jayshreeben Desai,** Research Guide, C.U. Shah University, Gujarat.

'जीवन-साधना' का संरक्षण

Tulsī Prajñā
48 (191-192)
July-Dec., 2021
ISSN : 0974-8857

नवकार-महामंत्र एक विश्लेषण

साध्वी विरागदृष्टाश्रीजी*

सारांशिका

जैन-दर्शन गुण प्रधान है न कि व्यक्ति प्रधान। जो उन गुणों की प्राप्ति करेगा वह परमेष्ठी/पूज्य अवस्था को प्राप्त हो जायेगा। इसलिये णमोकार मंत्र में किसी का भी नाम नहीं दिया गया है, जो उस पद पर विराजमान है उसको नमस्कार किया गया है। नमस्कार मंत्र का माहात्म्य है कि इसके ध्यान मात्र से वासनाओं और कामनाओं का स्रोत सूखने लगता है। इस महामंत्र के माध्यम से इन्द्रियों की वल्गा (लगाम) साधक के हाथ में आ जाती है।

इस संसार में यंत्रों में मंत्रों में यदि कोई शक्तिशाली है तो वह नवकार मंत्र ही है। यह मंत्र सार्वभौम और सम्प्रदायातीत मंत्र है। वैदिक परंपरा में जो महत्त्व गायत्री मंत्र को, बौद्धों में तिरसन मंत्र को दिया गया है वही महत्त्व जैन परंपरा में महामंत्र को दिया गया है। इसकी साधना से लौकिक और लोकोत्तर सभी प्रकार की उपलब्धियां होती हैं। प्रस्तुत आलेख में नवकार आराधना, नवकार और रंग, पांचों परमेष्ठियों का स्वरूप वर्णन, जप का स्थान, जप का आसन, दिशा, जप का समय, शुद्ध उच्चारण का महत्त्व, जपमाला और जप आवृत्ति आदि बिन्दुओं के द्वारा नवकार मंत्र की विशेषताओं का वर्णन किया जायेगा।

मुख्य शब्द

महामंत्र, इन्द्रिय-निग्रह, लोकोत्तर, ज्ञान ज्योति स्थविर, अवशोषक, जप आवृत्ति, करावर्त।

* **साध्वी विरागदृष्टाश्रीजी**, शोधार्थी, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान।

Tulsī Prajñā Research Journal (TPRJ)

Guideline for Writers

1. It is policy decision for TPRJ that editors reserve the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylish grounds, so that entry conforms to the uniform standard required for the journal.
2. Only Original, Authentic, Useful, Unpublished articles/papers will be accepted. The article once published in TPRJ cannot be published elsewhere without permission means the Copy right of the article published in the TPRJ shall remain vested with the journal.
3. Two Type script copies of the Manuscript along with Soft copy (Word File) in CD or email has to be submitted on appropriate addresses.
4. Writers are expected to provide short resume including contact details: postal address, email ID and Contact Numbers. (Format is provided on previous page)
5. The paper can be sent to authors again for upgrading it on basis of comments from experts.
6. The following are instructions for preparing the script:
   - Format of Article: Abstract (not more than 200 words), Key Words, Introduction, Problem, Research Methodology if any, Main Content, Research Design if any, Findings, Conclusion, Reference, Bibliography.
   - Font Type: Times New Roman /Krutidev010 respectively for English/Hindi.
   - Font Size: English 14/12/10 respectively for Heading/Main body/Reference. Hindi 16/14/12 respectively for Heading/ Main body/Reference.
   - Spacing : One and half for lines and double for Paragraph
   - Words: 4000-6000 words i.e. 10-15 Typed A4 Size Papers
   - Reference Type: MLA (8th edition)

     Link up for more help: http://www.easybib.com/guides/citation-guides/mla-8/ for examples: for journals and books respectively

     Kincaid, Jamaica. "In History." Callaloo, vol. 24, no. 2, Spring 2001, pp. 620-26.

     Jacobs, Alan. The Pleasures of Reading in an Age of Distraction. Oxford UP, 2011.
   - Reference Style : End note
   - Alignment: Justify
   - Quotation: verbatim et literatim (exact) with original: three dots to indicate ellipsis: in double inverted commas.
   - For the Manuscript prepared in English, The Words and /or citations from Sanskrit or any language other than English have to be in Roman Script, fully italicize and with standard diacritical marks.

RAJ HIN 28340/75

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन-प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपंचाशती (न्यायप्रकाशिकाव्याख्यायुता)	पं. विश्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंश साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chaalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125

सम्पादक; प्रकाशक – जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं; मुद्रक – तिलोक प्रिंटिग प्रेस, बीकानेर (राजस्थान)